सम्पादकीय

धर्म की स्थापना के लिए

मध्यकालीन दशगुरु परम्परा के दशम् गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपनी आत्मकथा बिचित्र नाटक में लिखा है कि मुझे परमात्मा ने इस संसार में धर्म की स्थापना करने के लिए भेजा था। धर्म हेत गुरूदेव पठायो। गीता में द्वापर युग के श्री कृष्ण ने भी कहा है कि जब धर्म का पतन होना प्रारम्भ हो जाता है तो धर्म की स्थापना के लिए मैं पुनः आता हूँ। शास्त्रों में लिखा है कि जो धर्म की रक्षा करता है। धर्म उसकी रक्षा करता है। परन्तु मूल प्रश्न है धर्म क्या है? श्री कृष्ण तो द्वापर युग में हुए थे। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज को धर्म को पुनः पटरी पर लाने के लिए कलयुग में अवतार लेना पड़ा। ऐसा भी माना जाता है कि यदि सभी लोग अपने-अपने धर्म के अनुसार चले तो संसार में कोई दुख ही न रहे। कुछ लोग इसका यह अर्थ भी निकाल लेते है कि संसार में अनेक धर्म हैं और इसके कारण यह कहना शुरु कर देते हैं कि सभी धर्म एक समान है और एक ही शिक्षा देते है। वास्तव में धर्म की परिभाषा को लेकर भारतवर्ष में पिछले दो सौ सालों में अराजकता का ही वातावरण बना हुआ है। धर्म को समझाने के लिए कुछ उदाहरणों का सहारा लिया जा सकता है। एक न्यायधीश का धर्म बिना किसी लालच अथवा भय क न्याय करना होता है। यह उसका धर्म है। इसी प्रकार राजा अथवा राज्य सरकार ऐसा करती है तो उसे धर्म राज्य कहा जायेगा और यदि ऐसा नहीं करती तो उसे अधर्म का राज्य कहा जायेगा। इस दृष्टि से दुनिया में सर्वश्रेष्ठ धर्म राज्य ही माना जा सकता है। अधर्म के राज्य की तो कोई वकालत नहीं कर सकता। राजा स्वयं किसी भी सम्प्रदाय, पंथ, मजहब अथवा रिलीजन का हो लेकिन उसका नागरिकों के प्रति व्यवहार किसी मजहबी, सम्प्रदाय या रिलीजयस भाव से प्रेरित नहीं होना चाहिए। यदि राज्य सरकार ऐसा करती है तो माना जायेगा कि राज्य साम्प्रदायिक राज्य हो गया है वह धर्म राज्य नहीं है। शास्त्रों में साम्प्रदायिक अथवा रिलीजियस अथव मजहबी राज्य की निंदा की गई है, धर्म राज्य की प्रशंसा की गई है।

संकट में पड़े हुए व्यक्ति की मदद करना प्रत्येक मानव का धर्म है। अत्याचार से लड़ना भी मानव का धर्म है। जब कोई व्यक्ति किसी अत्याचारी के सामने सिर तान कर खड़ा हो जाता है। न तो वह उसके बल से भयभीत होता है और न ही उसके लालच से विचलित होता है, तो मान लेना चाहिए कि वह अपने मानव धर्म का पालन कर रहा है। ऐसा व्यक्ति एक प्रकार से धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए तैयार हो जाता है। वह इसके लिए अपने प्राणों की बाजी भी लगा देता है। भारतीय इतिहास में धर्म के लिए सर्वस्व अर्पित कर देने वाले महापुरुषों की एक लम्बी श्रंखला है। नवम् गुरु श्री तेगबहादुर जी का बलिदान इसी श्रेणी में आता है। सामान्य परिस्थितियों में तो सभी लोग अपने-अपने धर्म का पालन कर ही लेते है। लेकिन जब कोई शक्ति धर्म का पालन करने वालों के रास्ते में आ जाती है तभी अग्नि परीक्षा होती है। गुरु गोबिन्द सिंह जी उसी अग्नि परीक्षा में से निकले थे। इन अर्थों में धर्म सनातन और शाश्वत है। वह स्थान और काल से परे है और इनसे निरपेक्ष भी। कोई व्यक्ति या तो धर्म का पालन करने वाला हो सकता है या फिर अधर्म के रास्ते पर चलने वाला। इसलिए धर्म परिवर्तन संभव नहीं है। धर्म परिवर्तन नहीं किया जा सकता। जो धर्म का पालन नहीं करता वह अधर्मी कहलायेगा। धर्म का पालन करना सभी का दायित्व है। कोई भी व्यक्ति यह कहकर पीछा नहीं छुड़ा सकता, कि उसने धर्म परिवर्तन कर लिया है। अलबत्ता व्यक्ति अपना सम्प्रदाय पंथ, मजहब अथवा रिलीजन परिवर्तित कर सकता है। कोई व्यक्ति वैष्णव से ईसाई बन सकता है, वैष्णव से इस्लाम पंथी बन सकता है, नानक पंथी से मुहम्मद पंथी बन सकता है।, आर्य समाजी से शैव पंथी बन सकता है। इस प्रकार रिलीजन अथवा मजहब में परिवर्तित हो सकता है। लेकिन धर्म में परिवर्तन नहीं हो सकता। चाहे कोई नानक पंथी है, चाहे शैव पंथी, चाहे मुहम्मद पंथी है, चाहे यीशु पंथी है, लेकिन यदि वह न्यायधीश है तो न्याय करना उसका धर्म है। इसमें वह परितर्वन नहीं कर सकता। अतः धर्म सनातन हैं, अकाल है। इसी धर्म को पुनः पटरी पर लाने के लिए श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का इस लोक में आगमन हुआ था।● – **डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री**